ॐ स्नेहो कथाः द्रुष विउतन्या कविसहाउन्या पापकाटन्या ः॥ श्री सुहाउन्या
[illegible]ः सुन्नवेस्कुन्याः भजन गाँउ दापुराउठेर्हुन्या ः॥९॥ पिर तिलेनज
गनिहाँसनसंसिराबनुवेस्कु, [illegible] अलनुः॥ [illegible] वझिसंझीहाँमरोक [illegible]
मन [illegible] ः॥१०॥ गउवठाउँदै [illegible] नरमलालपाउँदुन ः॥ः
गउ दिन [illegible] कलिसिजाँदुभन् ॥११॥ दिनबिना पाउँछ नेल
[illegible] ॥ [illegible] गारः [illegible] घरि हृदयमा ह्रियौं काँ
मदेवभरी ॥१२॥ न [illegible] नकामहि [illegible] बेस्कुन्याः॥

बराह्रपकमलस [illegible] मा चर [illegible] पर्दै महादेव्या ॥१३॥ [illegible] बकाउन्यासे:

[illegible] विज [illegible] अरुकुरासबै विर्सी जाइन्या अमृत वंटको स

भिडाइ [illegible] ॥१४॥ देवताको [illegible] पो अमृत हरमा पलकदे [illegible] वध भै गयो: ॥ पलका:

[illegible] ने त्रमा विधि पनि जडे हां भिमा [illegible] ॥१५॥: पतिर पुत्र कलत्र भाई वि:

[illegible] हां हजुर थां आँ छां इंदछन: ॥ मिल न बेजछन् जीद लो भिज नछ्वति ला

ई [illegible] दछन: ॥१६॥: विज नजा [illegible] न्या कामजम नावद जहां सन्या:

[illegible] नज [illegible] म्या: ॥ लक्ष्मिको निवास हद यदे छि न्याकत पिजाई न्या मन्त्र गनह न्या: ॥१७॥

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे रामः ॥ रामः ॥ रामः रामः

प्रवर पण्डित भोजराज शर्म्मा ऽऽ चंपि इति विवेचयन्तु प्रवर पण्डिता इति: अमरा [illegible]

राम कासु: ॥५॥